RNI/MPHIN/2013/61414

ISSN 2278-0327
Peer Reviewed
Refereed Journal

UGC Care Listed

ज्योतिर्वेद-प्रस्थानम्

संस्कृत वाङ्मय की शोधपत्रिका - संस्कृत छात्रों की मार्गदर्शिका

वर्ष - 12, अंक - 1 मार्च-अप्रैल 2023

आज़ादी का
अमृत महोत्सव

Bharatiya Jyotisham
पर्येति भावयन् लोकान्
भारतीय ज्योतिषम्

₹ 30

ISSN 2278 - 0327

RNI/MPHIN/2013/61414
UGC Care Listed

Bi - Monthly
Peer Reviewed
Refereed Journal

Bharatiya Jyotisham
पर्येति भासयन् लोकान्

ज्योतिर्वेद-प्रस्थानम्

संस्कृत वाङ्मय की शोधपत्रिका-संस्कृत छात्रों की मार्गदर्शिका

प्रधान सम्पादक

प्रो. पी.वी.बी. सुब्रह्मण्यम्

कार्यकारी सम्पादक

अविनाश उपाध्याय

सम्पादक

डॉ. रोहित पचौरी

डॉ. रविन्द्र प्रसाद उनियाल

ज्ञान सहयोग

पिडपर्ति पूर्णय्या विज्ञान ट्रष्ट चैन्नै

Jyotirveda-Prasthanam is printed & published by
Smt P V N B Srilakshmi
on behalf of
Bharatiya jyotisham
L-108, Sant Asharam Nagar Phase - 3, Laharpur, Bhopal - 462043
Editor - DR. ROHIT PACHORI*

ISSN 2278 - 0327

विषय-सूची

क्र.	लेख विषय	लेखक	पृ.सं.
1.	भगवान् श्रीकृष्ण किसके वंशज : अभिव्यञ्जन एवं अवगुण्ठन की गूढ़ता	डॉ. अक्षय कुमार मिश्र	05
2.	शिक्षा व्यवस्था में समावेशन : विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के संदर्भ में	डॉ. रमेश कुमार अवस्थी	09
3.	सिद्धांतविहीन राजनीति : गांधी की दृष्टि में	डॉ. सूर्य प्रकाश पाण्डेय	14
4.	वेदों में पर्यावरण चिंतन	डॉ. निशीथ गौड़	18
5.	आयुर्वेद में श्वित्र की अवधारणा : एक समीक्षा	पूजा वर्मा, अभिनव, कामेश्वर नाथ सिंह, आरती कुमारी	21
6.	बाल शोषण एवं उसको रोकने में शिक्षा की भूमिका	डॉ. राजकुमारी गोला	24
7.	साङ्ख्य एवं अद्वैतवेदान्त दर्शन में सूक्ष्मशरीर का पर्यालोचन	डॉ. विकास सिंह	27
8.	माध्यमिक विद्यालयी शिक्षा मॉडल के बदलते परिदृश्य में प्रधानाचार्य की भूमिका	डॉ. विनोद कुमार, सुमन पाल	32
9.	राहुल सांकृत्यायन के यात्रा साहित्य में उत्तराखण्ड की लोक-कलाओं का स्वरूप	डॉ. अनूप प्रसाद	38
10.	वैश्विक भाषा के रूप में हिंदी का उदय और बाजार अर्थव्यवस्था में इसकी भूमिका	डॉ. योगेन्द्र बाबू, डॉ चन्द्र शेखर पाण्डेय	41
11.	श्रीमद्भगवद्गीता माहात्म्य	डॉ. गीता दूबे	46
12.	डिजिटल युग में शिक्षक की बदलती भूमिका	डॉ. मनीष भटनागर, डॉ. प्रगति भटनागर	48
13.	केदारनाथ सिंह की कविताओं में सामाजिक सरोकार	राजेश कुमार	52
14.	उत्तर वैदिक कालीन राज्य, सामाजिक एवं शैक्षिक व्यवस्था	डॉ. रमण मिश्र	54
15.	पातंजल योग सूत्र में वर्णित अध्यात्म : एक समीक्षात्मक अध्ययन	डॉ. अनुजा रावत	57
16.	मूलशंकर-नाट्यत्रयी में शासनपद्धति का धार्मिक प्रारुप	नन्दिनी	60
17.	राष्ट्रीय एकीकरण के विभिन्न आयाम : महात्मा गाँधी के दृष्टि से	डॉ. विकास कुमार	62
18.	हठयोग द्वारा समग्र स्वास्थ्य एक विवेचनात्मक अध्ययन	विनोद प्रसाद नौटियाल	66
19.	राजभाषा हिंदी से संबंधित संघ की राजभाषा नीति एवं कार्यान्वयन	डॉ. वीरेन्द्रसिंह राव	68
20.	पुराणों में योगवर्णित ईश्वर का स्वरूप	डॉ. अशोक कुमार मीना	71
21.	वृहद भारत में नया शिक्षा नीति (2020) को लागू करना एक चुनौती	डॉ. शशिकान्त यादव	78
22.	अभिज्ञानशाकुंतलम् : सामाजिक यथार्थ के आलोक में	डॉ. सोमनाथ दास	82
23.	भारतीय शिक्षा व्यवस्था में सार्वजनिक-निजी साझेदारी की भूमिका	प्रिन्स कुमार	87
24.	कालिदास की रचना में संस्कृति एवं कला	डॉ. रघुनाथ प्रसाद	92
25.	ऊर्मिलीयमहकाव्य में गृहस्थजीवन की शिक्षा	चिरञ्जीत सरकार	94
26.	भारत में महिलाओं के खिलाफ साइबर अपराध : एक नज़र	श्रीराधारंजन, डॉ. पल्लवीसिंह	97
27.	चण्डतान्डवम् : आधुनिक संस्कृत साहित्य में 'भाण'	डॉ. अर्णव पात्र	101
28.	सामाजिक सरसता रामायण के सन्दर्भ में	शुभम सिंह, डॉ. कनकलता	104

29. संस्कृत महाकाव्यों में आख्यान परम्परा	डॉ. संजीव कुमार	107
30. ग्रामीण विकास में सूचना और संचार का योगदान	डॉ. अजय कुमार सोनकर	109
31. गोंड पुरुषों के प्रजनन स्वास्थ्य स्थिति एवं सांस्कृतिक आयाम (महाराष्ट्र राज्य के वर्धा जिले के विशेष संदर्भ में)	नवलेश राम	111
32. भारतीय भाषा माध्यम से उच्च शिक्षा में सम्भावनायें, चुनौतियाँ एवं शिक्षकों की भूमिका: एक दृष्टि	प्रो. चंदना डे, डॉ. अंकिता सिंह	115
33. ग्रामीण सामाजिक परिवर्तन में सामाजिक जनसंचार माध्यमों की भूमिका (गजरौला ब्लॉक के दो गॉवों के संदर्भ में)	पारूल, डॉ. सरिता	118
34. मुरादाबाद महानगर की मलिन बस्तियों के विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण का उनकी आकांक्षा स्तर पर प्रभाव का अध्ययन	अजय गौतम, प्रो. (डॉ.) राजकुमारी सिंह	121
35. वर्तमान परिप्रेक्ष्य में अथर्ववेद की उपादेयता	डॉ. दीप्ति बाजपेयी, अनामिका	124
36. समाज पर सोशल मीडिया का प्रभाव: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन	पुलकित शर्मा, डॉ. राजेश कुमार शुक्ला	128
37. सम्भल जनपद में माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् सामान्य एवं विकलांग विद्यार्थियों की व्यक्तित्व समायोजन का विश्लेषणात्मक अध्ययन	अनामिका भारती, प्रो. मोहन लाल आर्य	131
38. माध्यमिक विद्यालयों के छात्र-छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि: एक अध्ययन	खेमेन्द्र कुमार शर्मा	134
39. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत अनुसूचित जाति एवं जनजाति के विद्यार्थियों का आकांक्षा स्तर पर शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन	प्रशान्त कुमार, डॉ. नीरा सिंह	138
40. विद्यार्थियों में मोबाइल फोन की तल या प्रयोग का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव: एक अध्ययन	डॉ. मोहन लाल 'आर्य'	145
41. मुरादाबाद जनपद में सिंचाई व्यवस्था एवं सिंचाई के साधनों का एक भौगोलिक अध्ययन	डॉ. मोहन लाल 'आर्य', राजेन्द्र सिंह	150
42. विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर उनके मानसिक स्वास्थ्य के प्रभाव का अध्ययन	विनीत, डॉ. नीरा सिंह	155
43. माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर मानसिक स्वास्थ्य के प्रभाव का अध्ययन	डॉ. मोहन लाल 'आर्य', कु. प्रियंका	158
44. बंगाली नाटककारों द्वारा रचित संस्कृत व्यंग्यनाटिका : धरित्रि-पति-निर्वाचनम्	मधुरिमा मुखर्जी	163
45. गोरखपुर जनपद में सिंचाई के साधन एवं सिंचित क्षेत्र का वर्तमान स्वरूप एक भौगोलिक विश्लेषण	डॉ. मोहन लाल 'आर्य', सविता सिंह	165
46. प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना से ग्रामीण महिलाओं का सशक्तिकरण : एक समाजशास्त्री विश्लेषण	डॉ. इन्दिरा श्रीवास्तव, नीतू शुक्ला	169
47. तनाव प्रबंधन में प्राणायाम (योगिक श्वसन) की भूमिका : एक व्यवस्थित समीक्षा	लक्ष्मीकांत नागर, डॉ. चिंताहरण बेताल	173
48. भारतीय यौगिक परिप्रेक्ष्य में मानसिक एकाग्रता	रश्मि तिवारी, प्रो.कामेश्वर नाथ सिंह	180
49. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों का विज्ञान, सामाजिक विज्ञान और अंग्रेजी में शैक्षिक उपलब्धि एवं अभिरूचि का विश्लेषणात्मक अध्ययन	मौ. सालिम, महेन्द्र प्रसाद 'पाण्डेय'	184
50. गुरुभक्ति और भक्ति के साथ स्वप्नवासवदत्तम्	प्रवीर सरकार	189

ISSN 2278 - 0327

भारतीय भाषा माध्यम से उच्च शिक्षा में सम्भावनायें, चुनौतियाँ एवं शिक्षकों की भूमिका: एक दृष्टि

प्रो. चंदना डे
विभागाध्यक्ष शिक्षाशास्त्र विभाग
ख्वाजा मोईनुद्दीन चिश्ती भाषा विश्वविद्यालय, लखनऊ

डॉ अंकिता सिंह
शिक्षाशास्त्र विभाग
ख्वाजा मोईनुद्दीन चिश्ती भाषा विश्वविद्यालय, लखनऊ

शोध सार-

भाषा से मस्तिष्क का विकास होता है, भाषा से ही विचार ग्रहण और विचार की अभिव्यक्ति होती है। छात्र जीतनी भाषाओं में दक्ष होगा उतना ही अच्छा होगा। जब छात्र स्कूल शिक्षा से लेकर उच्चतर शिक्षा में पढ़ेगा, लिखेगा एवं व्यवहार करेगा, तभी उसमें भाषा की दक्षता विकसित होगी। यहि भारत के विकास के लिए अच्छा होगा। क्योकि अंग्रेजी शिक्षा प्रणाली से भारतीयता का विकास नहीं होता और समाज में मानव संपदा का उपयुक्त प्रयोग भी नहीं हो पाता। शिक्षा मनोविज्ञान के शोध भी यह स्पष्ट करते हैं कि मानव मन जिस भाषा में बचपन से ही सोचने का आदी होता है उसी भाषा में संचार के प्रति अधिक ग्रहणशील होता है। लोगों की सोच और भावनाओं को तैयार करने में मातृभाषा महत्वपूर्ण है। अपनी भाषा में सीखने पर छात्रों की अभिव्यक्ति अधिक प्रभावपूर्ण होती है।

बीज शब्द- राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020), भारतीय भाषा, सकल नामांकन अनुपात, भाषाई विविधता

उच्चतर शिक्षा में समानता व समावेश के उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति में भारतीय व द्विभाषा माध्यम से उच्चतर शिक्षा प्रदान करने की सिफारिश की गई है। इसलिए सरकारों का दायित्व है कि उच्चतर गुणवत्तायुक्त ऐसे उच्चतर शिक्षण संस्थानों का निर्माण और विकास करना जो स्थानीय व भारतीय भाषा में या द्विभाषी रूप से शिक्षण कराये और सभी उच्चतर संस्थाओं में सभी उच्चतर संस्थाओं द्वारा उठाये जाने वाले कदमों में से एक है कि सभी द्विभाषी, भारतीय भाषा और रूप से पढ़ाए जाने वाले डिग्री पाठ्यक्रम विकसित करने को कहा गया है। इस पद्धति को अपनाने के पीछे बहुत महत्वपूर्ण कारण है जो निम्न लिखित है।

- पब्लिक विद्यालय अंग्रेजी भाषाओं में शिक्षण कराते हैं जिसके कारण छात्र को पाठ पूर्ण रूप से समझ नही आता और शिक्षण उद्देश्य पूर्ण नहीं हो पाते है।
- शोध ये दर्शाते हैं कि अंग्रेजी माध्यम के स्थान पर क्षेत्रीय माध्यम का उपयोग करने वाले छात्रों की उपलब्धता में उच्च स्तर को प्राप्त किया है एवं विज्ञान और गणित में प्रदर्शन, अंग्रेजी की तुलना में अपनी मूल भाषा में पढ़ने वाले छात्रों का बेहतर पाया गया है।
- मातृभाषा में अध्ययन के परिणामस्वरूप उच्च उपस्थिति, प्रेरणा और छात्रों के बीच वार्तालाप के लिए आत्मविश्वास में वृद्धि होती है। मातृभाषा से परिचित होने के कारण माता पिता की भागीदारी और पढ़ाई में सहयोग कर सकते है।
- भारतीय भाषाओं में अध्ययन उन छात्रों के लिए महत्वपूर्ण है जो अपनी पीढ़ी या गॉव में पहली बार शिक्षा प्राप्त करने का प्रयास कर रहे हों वे एक विदेशी भाषा में अपरिचित अवधारणाओं के सम्पर्क में आने पर भय का अनुभव करते हैं। इन पिछडें विद्यार्थियों का भय दूर होगा।
- सकल नामांकन अनुपात (जी0ई0आर0) में वृद्धि होगी यह अधिक छात्रों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षण प्रदान करने में सहायक होगा और इस प्रकार उच्च शिक्षा में सकल नामांकन अनुपात (जी0ई0आर0) में वृद्धि होगी।
- भारतीय भाषाओं द्वारा उच्च शिक्षा प्रदान करने से भाषाई विविधता को बढ़ावा मिलेगा यह सभी भारतीय भाषाओं के उपयोग और उसकी जीवंतता की रक्षा करेगा।
- भारत सरकार द्वारा इस पहल के पश्चात् निजी संस्थान भी भारतीय भाषाओं को शिक्षा के माध्यम के रूप में प्रयोग करने और द्वविभाषी कार्यक्रम प्रस्तुत करने के लिए प्रेरिष होगें। यह भाषा आधारित भेदभाव को रोकने में भी मदद करेगा।
- एक विदेशी भाषा में सीखना अपनी संस्कृति और विरासत से अलगाव की भावना विकसित करता है मातृभाषा में शिक्षा, छात्रों को उनकी सांस्कृतिक पृष्ठभूमि को सुगमता से समझने में सहायक होती है, छात्र अपनी संस्कृति जड़ों को सुरक्षित रखते हुए जीवन में प्रगतिपथ पर अग्रसर होगें और संस्कृति को संरक्षित करने में सहयोग कर सकेगें। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भारतीय छात्रों के लिए अवसरों की कमी अभिजात वर्ग और बाकी के बीच की खाई को पाटने के उद्देश्य के प्रतिकूल साबित हो सकती है। जी20 में, अधिकांश देशों में अत्याधुनिक विश्वविद्यालय है जहाँ उनके लोगों की प्रमुख भाषा में शिक्षण दिया जाता हैं। दक्षिण कोरिया में लगभग 70 प्रतिशत विश्वविद्यालय कोरियाई में पढ़ाते है, भले ही वे अंतर्राष्ट्रीय मंच पर भूमिका निभाने की इच्छा रखते हों। यह प्रवृत्ति चीन जापान और कनाडा जैसे अन्य देशों में भी देखी जाती है।

इस दिशा में प्रयास किये जा रहे है जो निम्नलिखित हैं:-

- हाल के वर्षो में, भारतीय भाषाओं में इंजीनियरिंग पाठ्यक्रय उपलब्ध कराने के लिए ठोस उपाय किए गए है।
- 2021-22 से 10 राज्यों में 19 इंजीनियरिंग कॉलेजों को छह भारतीय भाषाओं में इंजीनियरिंग पाठ्यक्रम चलाने की मंजूरी दी गई है।
- भारतीय भाषाओं के प्रति जागरूकता बढ़ाने के लिए विभिन्न गैर

सरकारी संगठनों द्वारा स्थानीय भाषा पत्रिकाओं, पुस्तकों और सामग्री में वृद्धि हुई है।

■ राष्ट्रीय अनुवाद मिशन की स्थापना इस दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल है।

■ कई बड़ी कंपनियां भारतीय भाषा बोलने वालों के लिए इंटरनेट पर पहुँच बढ़ाने का काम कर रहे है।

■ टाटा सामाजिक विज्ञान संस्थान ने मानविकी में उच्च शिक्षा के लिए भारतीय भाषाओं में सामग्री के उत्पादन के लिए एक केन्द्र स्थापित किया है। केन्द्र द्वारा आयोजित एक सभा में उच्च शिक्षा में भारतीय भाषाओं की उपस्थिति बढ़ाने की आवश्यकता और तौर-तरीकों पर चर्चा की गई। इसमें भारतीय भाषाओं की अपर्याप्तता, शब्दकोषों के निर्माण शिक्षक-शैक्षणिक विकास, डिजिटल अभिलेखागार के संकलन जैसे बिन्दुओं पर भी विचार मंथन हुआ।

■ इसका महत्व यह है कि जहाँ तक उच्च शिक्षा का संबंध है, इसमें सभी वर्गो को सम्मिलित करने के लक्ष्य को वास्तविकता बनाने का प्रयास किया जा रहा है।

आगे की चुनौतियां :

भारतीय भाषाओं या द्विभाषी माध्यम को अपनाने का कार्य आसान नहीं है । वर्तमान परिस्थितियों में आमूलचूल परिवर्तन अनिवार्य है, तभी यह नीति का अपनी अपेक्षाओं को पूर्ण कर सकेगी इस नीति के क्रियावन्यन में सम्भावित चुनौतियाँ निम्नलिखित है-

■ चयन प्रतिमान में बदलाव करना हो गया शिक्षा में क्षेत्रीय भाषा को बढ़ावा देने का निर्णय प्रमुख संस्थानों के भर्ती निर्णयों में हस्तक्षेप करेगा क्योंकि वे विषय वस्तु विशेषज्ञता के विपरीत भाषा प्रवीणता को प्राथमिक मानदंड के रूप में मनाने के लिए मजबूर होंगे। इसलिए नये चयन प्रतिमानों का निर्माण आवश्यक होगा।

■ उन्हें शिक्षण के लिए वैश्विक प्रतिभा पूल को देखना भी छोड़ना होगा। भारतीय मानव को विकसित करना एक बडी चुनौती साबित होगा।

■ क्षेत्रीय भाषाओं में गुणवत्तापूर्ण सामग्री की उपलब्धता एक अन्य चुनौती है। पाठ्यपुस्तकों एवं अध्ययन साम्रगी उपलब्ध करना, प्रथम महत्वपूर्ण में से एक है।

■ कई डिजिटल व कृत्रिम बुद्धि-संचालित उपकरणों का प्रयोग अंग्रेजी में प्राप्त अध्ययन साम्रगी के अनुवाद के लिए प्रयोग किया जायेंगा। जिससे उत्पन्न विश्वसनीयता सुनिश्चित करना और अनियमितता दूर करना कठिन साबित होगा।

■ अनेक सार्वजनिक क्षेत्र की इकाइयां प्रवेश स्तर के पदों के लिए स्कोर स्वीकार करती हैं, जो अंग्रेजी माध्यम में आयोजित किया जाता है। ऐसे सभी तंत्र को अपेक्षित दिशा में सुधार करना होगा।

■ भारतीय भाषा और द्विभाषा में उच्चतर शिक्षण करने के लिए कुशल शिक्षक एवं संकाय की उपलब्धता एक और महत्वपूर्ण चुनौती साबित होगी। क्योंकि वर्तमान में शिक्षक अग्रेजी माध्यम में पढ़ा है और पढ़ाने का इच्छुक है। इन शिक्षकों को भारतीय भाषा में पढ़ाने के लिए अतिरिक्त प्रयास करना होगा। इसके लिए यह कार्य आकर्षक बनाना और प्रेरित करना भी चुनौतीपूर्ण रहेगा।

■ इस वैश्विकारण के दौर में वर्तमान परिप्रेक्ष्य में वैश्विक मानकों के साथ गति बनाये रखना बनाये रखना भी महत्वपूर्ण कार्य है। क्षेत्रीय भाषाओं में तकनीकी पाठ्यक्रम प्रदान करने से छात्रों को वैश्विक श्रम और शिक्षा बाजारों में प्रतिस्पर्धा करने से रोका जा सकता है, और यह यह शिक्षा के अंतर्राष्ट्रीयकरण को बढ़ावा देने की दृष्टि के भी विरूद्ध है। इसके लिए शिक्षा तंत्र को इस प्रकार संचालित व विकसित करना होगा कि हम दूसरे देप के छात्रों एवं विशेषज्ञों को अपने देश व भारतीय शिक्षा प्रणाली की तरफ आकर्षित कर सके।

■ पिछले अनुभवों के परिणाम नहीं मिले है: उदाहरण के लिए तमिलनाडु में, तमिल माध्यम से इंजीनियरिंग शिक्षा प्रदान करने का कोई प्रभाव नहीं पड़ा है। इन प्रारंभिक नकारत्मक अनुभवों से उबर कर इस दिशा में सतत प्रयासरत रहना भी एक अपरिहार्य चुनौती होगी।

इन चुनौतियों से उबरने के पश्चात् ही यह सम्भव होगा कि हम ये अपेक्षा कर सके कि भारतीय उच्चतर शिक्षा का माध्यम भारतीय भाषा हो और सभी को समानता प्राप्त हो एवं सभी समेकित हो सकेगें। इन चुनौतियों से उबरने के निम्नलिखित सम्भावित क्रियाए प्रयोग अपनाए जा सकते है।

■ पहले एक नींव बनाने की आवश्यकता है, क्षेत्रीय भाषा में विज्ञान और तकनीकी शिक्षा को अनुदान के प्रावधान की आवश्यकता है।

■ भारतीय भाषाओं में उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा और प्रिंट सामग्री को पहले अनुवाद और व्याख्या में गुणवत्तापूर्ण बनाकर विकसित किया जा सकता है।

■ इस सम्बन्ध में, भारतीय अनुवाद और व्याख्या संस्थान की स्थापना का प्रस्ताव है जो भारतीय भाषाओं के विद्वानों, विषय विशेषज्ञों और अनुवाद एवं व्याख्या के विशेषज्ञों को नियुक्त करेगा।

■ निष्पक्षता और समावेश के सिद्धान्तों पर आधारित एक समान प्रणाली विकसित करना होगा।

■ मातृभाषा/क्षेत्रीय भाषा के उपयोग के माध्यम से समावेाश्न सुनिश्चित करते हुए शिक्षा का एक बुनियादी न्यूनतम मानक भी स्थापित किया जायेगा जो सभी असमानताओं को समाप्त करेगा।

■ क्षेत्रीय भाषा प्लस अंग्रेजी धारणा को अपनानें की आवष्यकता है शिक्षा के माध्यम के रूप भारतीय भाषाओं को दृढ़ करना भी आवश्यक है, परन्तु छात्रों के लिए अंग्रेजी भाषा पर अधिकार होना भी जरूरी है क्योंकि वे 21वीं सदी के वैश्विक मूल निवासी हैं।

■ अपने सभी छात्रों को ऑनलाइन अनुवाद की सुविधा प्रदान करने के लिए संस्थान और सरकार सामाजिक और आर्थिक रूप से कमज़ोर वर्गों के छात्रों को इलेक्ट्रनिक उपकरण और इंटरनेट सुविधाएं प्रदान करने को प्राथमिकता देनी होगी।

■ भारतीय भाषाओं में सामाजिक विज्ञान शिक्षा और अनुसंधान की आवश्यकता पर कुछ कार्य उपलब्ध हैं। परन्तु व्यावसिक वैज्ञानिक और तकनीकि विषयों में उपलब्ध है शोध, भाषा की शब्दावली को भी बढ़ाता

है और यह नए व जटिल विचारों को ले जाने हेतु वाहक के रूप में कार्य करता है। तकनीकी दस्तावेज का भारतीय भाषाओं में अनुवाद करना एक कठिन कार्य है क्योंकि तकनीकी शब्दों को व्यक्त करने के लिए शब्दावली की कमी है। हमारी भाषाओं के शोध प्रक्रिया से दूर होने के कारण, उनकी बौद्धिक जीवन्तता कम हो गई है तथा उनका विकास रूक गया है। एक ऐसे देश में जहा अधिकांश आबादी अंग्रेजी नहीं समझती, शिक्षा के माध्यम के रूप में विदेशी भाषा के उपयोग से लोग महत्वपूर्ण चिकित्सा और तकनीकी जानकारी से वंचित हो जाते हैं। जिसका उपयोग वे अपने और अपने समुदायों की भलाई के लिए कर सकते हैं। इसलिए भारतीय भाषाओं में शोध की आवश्यकता है।

भारतीय भाषा के माध्यम से उच्चतर शिक्षा प्रदान करने में शिक्षकों की भूमिका–

- उच्च शिक्षा में भारतीय भाषा को लाना एक क्रांतिकारी कदम है। इसका आधार शिक्षक ही है। शिक्षाकों के कंधों पर ही इसकी जिम्मेदारी है। शिक्षा के सभी भागीदार; केंद्र सरकार, सारी राज्य सरकारें, सारे षिक्षण संस्थान, कानून, समाज सब मिल कर भी ये कार्य पूरा नहीं कर सकते, आगर शिक्षक इसमें केंदीय भूमिका न निभाए।
- इस कार्य के लिए पाठ्यपुस्तक उपलब्ध नहीं है। मानविकी, कला, समाजशास्त्र जैसे विषयों में पाठ्यपुस्तक उपलब्ध है, लेकिन कौशल शिक्षा, व्यावसायिक शिक्षा, विज्ञान, डिजिटल शिक्षा की पाठ्यपुस्तक उपलब्ध नहीं है। हर क्लास हर लेवल की पाठ्यपुस्तक का निर्माण भारतीय भाषा में होना चाहिए। ये कार्य भाषा शिक्षकों का नहीं है। हर विषय के शिक्षक को स्वयं ये प्रतिज्ञा एवं प्रयास करके एक दो साल में ये कार्य सम्पन्न कर लेना होगा।
- एक भारत श्रेष्ठ भारत जो एनईपी का आधार वाक्य भी है, इसको साकार करने के लिए हम अंतरराष्ट्रीय नौकरीयों की तलाश नहीं हम इस तरह का भारत निर्माण करना होगा जिससे बहार के लोग भारत आए ये केंद्र सरकार, राज्य सरकार का कार्य नहीं है। शिक्षाकों को अपना विचार एवं व्यवहार बदलना चाहिये, संकल्प करना चाहिये। छात्रों में भारतीय भाषाओं के प्रति प्रेम स्थापित करना चाहिए। इसके लिए उनको तीन प्रवृत्तियाँ स्वयं में विकसित करनी होगी जो निम्नलिखित है:
- छात्रों के लिए प्रेम
- विषय के लिए प्रेम
- शिक्षण के लिए प्रेम

इसी से हर शिक्षक प्रभावशाली बन सकेगा और छात्रों को प्रेरित कर सकेगा। छात्रों में शिक्षक के प्रति श्रद्धा और विश्वास होना चाहिए। तब वे अनुकरणीय बन सकेगा। छात्र तभी उनका मार्गदर्शन स्वीकार करेंगें। भारतीय ज्ञान परम्परा अंग्रेजी भाषा में नहीं है, शिक्षकों को भारतीय भाषा में प्रभुत्व विकसित करना चाहिए, भारतीय ज्ञान परमपर में से विषयों को बाहर निकाल कर पठन पाठन एवं साहित्य निर्माण करना होगा। ये केवल भाषा से नहीं होगा। भारतीय भाषा से भारतीय ज्ञान परम्परा का निर्माण और उसमे नवाचार करना होगा। तब जाकर भारतीय तत्व से नवभारत का निर्माण होगा।

निष्कर्षः– भारतीय भाषाएँ शैक्षिक और सांस्कृतिक विकास के लिए अनिवार्य है क्योंकि वे संप्रेषण का सशक्त माध्यम होने के साथ ही संस्कृति की संवाहक भी होती है। भारतीय भाषाओं के प्रयोग को उच्च शिक्षा में अधिक सार्थक बनाने हेतु इस दिशा में क्रियात्मक शोध की आवश्यकता है जिससे यह निर्धारित किया जा सके की भाषाओं का संयोजन समुदाय की आवश्यकताओं के लिए सबसे उपयुक्त होगा।

उच्च शिक्षा स्तरों पर शिक्षा के लिए भारतीय भाषाओं का उपयोग राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP 2020) के केन्द्र बिन्दुओं में से एक है। द्विभाषी कार्यक्रमों की पेशकश के अतिरिक्त, उच्च शिक्षा संस्थानों और उच्च शिक्षा के कार्यक्रमों में मातृभाषा या स्थानीय भाषा का उपयोग करने को बढ़ावा देता है। आहवान के पीछे तर्क यह है कि 95 प्रतिशत छात्र, जो अपनी मातृभाषा मे प्राथमिक शिक्षा प्राप्त करते हैं, उन्हें उच्च अध्ययन के क्षेत्र में पीछे नहीं छोड़ा जाना चाहिए।

यह सर्वविदित है कि प्रत्येक भाषा क्षेत्र का अपना एक भिन्न समाज होता है और मनुष्य अपने आस–पास के समाज और परिवेश में ही भाषा सीखता है। मनुष्य का यह भाषा प्रेम समाज सापेक्ष होता है और उसकी भाषा समाज के भीतर ही प्रभावी होती है। इसलिए भाषा का अध्ययन व प्रचार, समाज के संदर्भ के बिना अधूरा सा रहता है। भाषा का प्रयोग हमें समाज और संस्कृति की संरचना का परिचय देता है। अतः हम कह सकते है कि भाषा एक अर्जित संपत्ति है और व्यक्ति इसका अर्जन समाज से करता है। इस कारण उच्च शिक्षा भारतीय भाषाओं का माध्यम समय व काल की माँग है।

सन्दर्भ ग्रन्थ–

1. ओबराय, एम. (2010). भारत संक्षिप्त विवरण, नई दिल्ली: न्यू विशाल पब्लिकेशन।
2. कौल, लोकेश (2004). शैक्षिक अनुसंधान की कार्यप्रणाली, नई दिल्ली: पब्लिकेशन हाउस।
3. गुप्ता, आर.(2012). हरियाणा सामान्य ज्ञान–एक परिचय, नई दिल्ली: रमेश पब्लिशिंग हाउस।
4. त्यागी, गुरसरन दास (2012). भारतीय शिक्षा का इतिहास एवं विकास, आगरा: अग्रवाल पब्लिकेशन्स।
5. चतुर्वेदी, बादल (2011). उत्तर प्रदेश 2011, लखनऊ: भारत बुक सेन्टर।
6. बाजपेयी, एल. बी.(2000). भारतीय शिक्षा का विकास एवं सामयिक प्रवृत्तियाँ, आलोक प्रकाशन।
7. पाल, राम बहादुर (2005). स्ववित्त पोपित अध्यापक शिक्षा संस्थाओं में भौतिक एवं मानवीय संसाधनों की स्थिति एवं उपयोग का अध्ययन, शोध एवं अध्ययन, शिक्षा विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय।
8. वशिष्ठ, के के (2006). विद्यालय संगठन एवं भारतीय शिक्षा की समस्यायें, मेरठ: लायल बुक डिपो।
9. सिंह, अरूण कुमार (2003). मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियाँ, दिल्ली: मोतीलाल बनारसीदास प्रकाशन।
10. त्रिपाठी, केसरी नन्दन एवं आलोक कुमार (2012). उत्तर प्रदेश: एक समग्र अध्ययन, इलाहाबाद: बौद्धिक प्रकाशन।